# Yogoda Satsanga Society of India

This year marks the Centennial Anniversary of Yogoda Satsanga Society of India – one of the nation's most distinguished spiritual institutions – personally founded by the great guru Sri Sri Paramahansa Yogananda (1893-1952), who was a world-renowned pioneer in spreading India's ancient science and philosophy of yoga meditation all over the earth.

Dissemination of scientific techniques for attaining direct personal enlightenment, serving mankind and promotion of cultural and spiritual understanding between East and West are among the objectives of Yogoda Satsanga Society of India.

It was in 1917 that Sri Sri Paramahansa Yogananda, acknowledged as one of modern India's greatest saints, and author of the internationally renowned spiritual classic Autobiography of a Yogi, began his worldwide work with the establishment of a yoga-themed boys' school in Dihika, West Bengal, marking the birth of Yogoda Satsanga Society. Yogoda, a word coined by Paramahansa Yogananda, is derived from Yoga, union; and da, "that which imparts"; the mission of this "How-to-Live" School was to combine the spiritual ideals of the ancient rishis with modern educational methods. One year later, Sri Yogananda transferred his fast-growing group of students to Ranchi. Thus, the Ranchi Ashram became the nucleus of Yogoda Satsanga Society. The dissemination of the yoga meditation science (in particular, the ancient techniques of Kriya Yoga) begun by Yoganandaji was expanded internationally when he founded Self-Realization Fellowship (SRF) in 1920 upon his arrival in the United States as India's delegate to an International Congress of Religious Liberals held in Boston, USA. He became renowned as an ideal "spiritual ambassador" of India, and established the international headquarters of YSS/SRF in Los Angeles. From there, he spread his teachings on India's time-honored science of meditation and spirituality to all continents.

From its humble beginnings, YSS has grown to include four ashrams at Ranchi (Jharkhand), Dakshineswar (West Bengal), Dwarahat (Uttarakhand) and NOIDA (National Capital Region). The Society has spiritual retreats in Chennai, Coimbatore, Dihika, Igatpuri, Pune, Puri, Serampore, Shimla and Telary, which are open to all those interested in yoga meditation. YSS has more than 200 meditation centres throughout India. (More than 500 temples, ashrams, retreats and meditation centers have been established by its sister organization, Self-Realization Fellowship, in all other parts of the world.)

Dedicated to carry on the spiritual and humanitarian work of Paramahansa Yogananda, YSS/SRF has focused on teaching an uncomplicated system of specific yoga techniques intended to make the highest achievements of divine realisation available to all individuals. Thus YSS has distinguished itself as a leading force in the renaissance of the ancient universal spirituality that has been India's special pride and glory for millennia.

The charitable activities of YSS include the operation of twenty-three educational institutions, from primary schools to post-graduate colleges. In addition, YSS provides scholarships to deserving students all over the country. In the medical field, YSS operates charitable hospitals, clinics and medical camps. Help is provided to orphanages and leprosy colonies, and relief to those afflicted by natural disasters.

By faithfully carrying on the legacy that was created 100 years ago by Paramahansa Yoganandaji – and nationwide service to all sectors of the population – YSS/SRF continues to bring much-needed peace and light into the lives of millions struggling with the challenges of the modern-day world.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Yogoda Satsanga Society of India.

**Credits:-**

| | | |
|---|---|---|
| Text | : | Based on the material received from proponent |
| Stamp / FDC/Brochure Cancellation Cachet | : | Smt. Alka Sharma |

भारतीय डाक विभाग
**DEPARTMENT OF POSTS**
**INDIA**



योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ़ इण्डिया
YOGODA SATSANGA SOCIETY OF INDIA
1917-2017



# विवरणिका BROCHURE

# योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया

इस वर्ष योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया अपनी स्थापना की शताब्दी वर्षगांठ मनाने जा रही है। यह संस्था भारत की सर्वाधिक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक संस्थाओं में से एक है जिसकी स्थापना स्वयं श्री श्री परमहंस योगानन्द (1893-1952) द्वारा की गई थी। योगानन्द जी उन अग्रगामी विश्वविख्यात हस्तियों में से थे, जिन्होंने भारत के प्राचीन विज्ञान एवं ध्यान-योग दर्शन को समूचे संसार में प्रसारित किया।

ईश्वर की प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभूति करना, मानवजाति की सेवा करना तथा पूर्व एवं पश्चिम के बीच सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समझ पैदा करना योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया के प्रमुख उद्देश्यों में से हैं।

यह सन 1917 में था, जब श्री श्री परमहंस योगानन्द, जिनकी गणना आधुनिक भारत के महानतम संतों में की जाती है, और जो विश्वविख्यात आध्यात्मिक गौरवग्रंथ, Autobiography of a Yogi (योगी कथामृत) के लेखक भी हैं, ने बंगाल स्थित डिहीका नामक स्थान पर बालकों के लिए एक योग-विद्यालय की स्थापना करते हुए अपने विश्वव्यापी मिशन का शुभारंभ किया। यही वह ऐतिहासिक पल था जब योगदा संत्संग सोसाइटी का जन्म हुआ। 'योगदा' शब्द, जिसका आविष्कार परमहंस योगानन्दजी ने किया था, दो शब्दों के समास से बना है, ''योग'' अर्थात् जोड़ना एवं ''दा'' अर्थात ''वह जो प्रदान करे''। ''आदर्श जीवन'' की कला पर आधारित इस विद्यालय का मिशन था प्राचीन ऋषियों के आध्यात्मिक आदर्शों को आधुनिक शिक्षा पद्धतियों के साथ जोड़ना। एक वर्ष पश्चात्, श्री योगानन्दजी ने अपने तेजी से बढ़ते हुए छात्रों को रांची स्थानान्तरित किया। इस प्रकार, रांची आश्रम योगदा सत्संग सोसाइटी का केन्द्र बन गया। ध्यान-योग विज्ञान (विशेषत: प्राचीन क्रिया-योग विज्ञान) का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार तब हुआ जब सन् 1920 में अमेरिका के बॉस्टन शहर में आयोजित इंटरनैशनल कॉन्फ्रेंस ऑफ रिलीजियस लिबरल्स में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुंचे, योगानन्दजी ने वहां सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप की स्थापना की। इस प्रकार, वे भारत के आदर्श ''आध्यात्मिक दूत'' के रूप में विख्यात हुए और उन्होंने लॉस एंजिलिस में योगदा सत्संग सोसाइटी/सेल्फ रियलाइजेशन फेलोशिप के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय की स्थापना की। वहीं से उन्होंने भारत के कालजयी ध्यान-योग विज्ञान एवं आध्यात्मिकता पर आधारित अपनी शिक्षाओं को समूचे विश्व में प्रसारित किया।

छोटी सी शुरूआत करते हुए आज योगदा सत्संग सोयाइटी एक विशाल संस्था में परिणत हो चुकी है तथा आज इस संस्था के चार आश्रम हैं : रांची (झारखंड), दक्षिणेश्वर (बंगाल), द्वाराहाट (उत्तराखंड) एवं नोएडा (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)। साथ ही चेन्नई, कोयम्बतूर, डिहीका, इगतपुरी, पुणे, पुरी, श्रीरामपुर, शिमला एवं तेलारी में संस्था द्वारा संचालित आध्यात्मिक रिट्रीट केन्द्र भी हैं, जो ध्यान-योग में इच्छुक सभी आगन्तुकों के लिए खुले हैं। समूचे भारत में योगदा सत्संग सोसाइटी के 200 से अधिक ध्यान केन्द्र हैं। इसने विश्व भर में 500 से अधिक ध्यान मन्दिरों, आश्रमों, रिट्रीट केन्द्रों एवं ध्यान केन्द्रों की स्थापना की है।

परमहंस योगानन्दजी के आध्यात्मिक एवं लोकोपकारी कार्य के संवर्द्धन के प्रति कृतसंकल्प योगदा सत्संग सोसाइटी/सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप की विशेषता लोगों को विशिष्ट योग प्रविधियों की एक ऐसी सरल प्रणाली की शिक्षा प्रदान करना है जिसके माध्यम से सभी लोगों को ईश्वर-प्राप्ति की उच्चतम उपलब्धियों का मार्ग सुलभ हो सके। योगदा सत्संग सोसाइटी उस प्राचीन सार्वभौमिक आध्यात्मिकता के आधुनिक पुनर्जागरण में एक अग्रगण्य संस्था के रूप में उभर कर आयी है जो सदियों से भारत का विशेष गौरव और वैभव रहा है।

योगदा सत्संग सोसाइटी की धर्मार्थ सेवाओं में 23 आध्यात्मिक संस्थानों का संचालन सम्मिलित है। इन संस्थानों में प्रारंभिक विद्यालयों से लेकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, योगदा सत्संग सोसाइटी देश भर में योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति भी प्रदान करती है। चिकित्सा के क्षेत्र में संस्था द्वारा धर्मार्थ अस्पतालों, क्लीनिक एवं चिकित्सा शिविरों का संचालन किया जाता है। साथ ही अनाथालयों तथा कुष्ठ रोगियों की कॉलोनियों को सहायता प्रदान की जाती है तथा प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों को राहत सेवा भी प्रदान की जाती है।

सौ वर्ष पूर्व जिस मिशन का शुभारंभ परमहंस योगानन्दजी ने किया था, उसका आज भी निष्ठापूर्वक प्रवर्तन करते हुए तथा समाज के प्रत्येक वर्ग की राष्ट्रव्यापी सेवा करते हुए योगदा सत्संग सोसाइटी/सेल्फ रियलाइजेशन फेलोशिप उन लाखों लोगों के जीवन को वांछित शांति और प्रकाश से भर रही है जो इस आधुनिक जगत की चुनौतियों से जूझ रहा है।

डाक विभाग योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**आभार:-**

| | | |
|---|---|---|
| मूलपाठ | : | प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित |
| डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण | : | श्रीमती अलका शर्मा |

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग<br>Denomination | :<br>: | 500 पैसा<br>500 p |
| मुद्रित डाक टिकटें<br>Stamps Printed | :<br>: | 442000<br>442000 |
| मुद्रण प्रक्रिया<br>Printing Process | :<br>: | वेट ऑफसेट<br>Wet Offset |
| मुद्रक<br>Printer | :<br>: | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद<br>Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00